श्री सुमतिनाथ विधान

रचयिता

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत

मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री सुमतिनाथ विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्रीविद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रसंग	:	मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज का स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा वर्ष 2023
संयोजक	:	बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना
संस्करण	:	तृतीय, 1100 प्रतियाँ
सहयोग राशि	:	30/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्रकाशक	:	विद्या सुव्रत संघ
प्राप्ति स्थान	:	१. बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना Mob.-9425128817 २. अमर ग्रंथालय इंदौर, 9425478846
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥ तेरा...
जिन माँ बापू ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥

अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहंत प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ 1॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ 2॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ 3॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ 4॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ 5॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ 6॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ 7॥

हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहंत फिर सिद्ध हम भी॥8॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥9॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(अवतार/लय–चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य (सखी)

नहिं केवल अर्घ्य चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री वृषभनाथ स्वामी अर्घ्य (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम वसुधा मिलती अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य (शंभु)

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥
अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।

ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य (शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य (आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य (सखी)

यह अर्घ्य चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥

जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ्य अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ्य चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सुव्रत दान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सुमतिनाथ विधान

जय बोलिये

अज्ञान अंधकार के हर्त्ता,
ज्ञान प्रकाश के कर्त्ता,
भक्तों के भर्त्ता,
निज के जिन में परिवर्ता,
सुमति के दातार,
कुमति के हर्त्तार
परमपूज्य
श्री सुमतिनाथ भगवान् की जय॥

भजन

(लय : भक्ति बेकरार.....)

सुमतिनाथ प्रभु नाम है, जिनको नम्र प्रणाम हैं।
जिनके जय-जयकारों से, होते अपने काम हैं॥

कदम-कदम पर बुद्धि भटकती, तर्क नर्क सा दुखदाता। तर्क...
दृढ़ विश्वास अँधेरे में भी, निडर दौड़ता ही जाता॥ निडर...
जो सम्यक् श्रद्धान हो, कहा भेद विज्ञान जो।
जो माने भगवान् को, बस ऐसा वरदान दो॥
सुमतिनाथ.....॥ 1॥

ज्ञान बिना तो कौन सुखी है, ज्ञान दुःखों का मूल है। ज्ञान....
राग सहित प्रतिकूल ज्ञान है, राग रहित अनुकूल है॥ राग....
हम पर भी प्रभु ध्यान दो, हमको सम्यक् ज्ञान दो।
हमें सफलता देता है वो, वीतराग विज्ञान दो॥
सुमतिनाथ.....॥ 2॥

सदाचार बिन इस दुनियाँ में, कोई न रिश्ते न नाते। कोई....
सुख समृद्धि रिद्धि सिद्धि न, गुरु शिष्य भी न पाते॥ गुरु....
वह सम्यक् चारित्र दो, मुक्ति रमा का चित्र दो।
'मुनिसुव्रत' पदरज पा महके, वो रत्नत्रय इत्र दो॥
सुमतिनाथ.....॥ 3॥

श्री सुमतिनाथ विधान

(लय : माता तू दया करके....)

हे! पंचम तीर्थंकर! जड़बुद्धि कुमति हर्त्ता।
हे! सुमतिनाथ! भर्ता, हे! सुमति ज्योति कर्त्ता॥
हे! मंगलमय मंगल, हे! तारणतरण जहाज।
सबको तारो तुम तो, हमने भी दी आवाज॥

हे! जिनवर जी अर्जी, मंजूर तुरत कर लो।
भव में डूबे हमको, दे शरण पार कर दो॥
उपकार न भूलेंगे, मन से तो छूलेंगे।
निज सहज रूप पाने, श्रद्धा से पूजेंगे॥
हे! पंचम तीर्थंकर.....।

(सोरठा)

सुमति-सुमति दातार, सुमतिनाथ भगवान् हो।
आओ मन के द्वार, हरो भ्रमण अज्ञान को॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(पुष्पांजलिं.....)

हम निर्मल शुद्धातम, यह तत्त्व नहीं समझे।
तो रागद्वेष करके, दुःख संकट में उलझे॥
अब जन्म पहेली को, सुलझाने वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं.....।

जग की शीतलता से, ना प्यास ताप नशते।
ना ज्ञानामृत मिलता, बस भव-भव में तपते॥

संताप मिटाने को, जिनचन्दन वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं.....।

कोल्हू के बैलों सम, भव चक्रों में खोये।
हम धर्म चक्र भूले, तो फूट-फूट रोये॥
अब अखण्ड आतम को, पाने जिन-वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्.....।

तज शूल असंयम के, संयम के फूल खिलें।
जीवन फूलों सा हो, जिन पद की धूल मिले॥
अब काम घाव भरने, ब्रह्म-औषध वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं.....।

सुख पाने को आकुल, व्याकुल दुख को तजने।
पर भाव नहीं बनते, अपने प्रभु को भजने॥
बिन भक्ति मुक्ति कैसे, सो भक्ति की वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.....।

यह पुद्गल की ज्योति, अन्तर को छुए न भले।
पर आरती कर इनसे, आतम का दीप जले॥
अब अन्तस् तम हरने, जिन ज्योतित वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं.....।

भव अंगारों से हम, तपके झुलसे जलते।
पर कर्म तनिक न तपे, हम हाथ रहे मलते॥

अब कर्म जलाने को, अध्यातम वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

पुद्गल का विकृत रस, आतम में जहर भरे।
जिसको केवल चख के, प्राणी बेमौत मरे॥
अब मृत्युंजय बनने, जिन करुणा वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं.....।

हे नाथ! अभी तक हम, तुम जैसे नहीं हुए।
ना दुख के बंध झड़े, ना आतम रूप छुए॥
ना आतम से तन के, रिश्ते नाते तोड़े।
दर दर तो भटके पर, ना हाथ तुम्हें जोड़े॥

अब कृपा आपकी पा, यह अर्घ चढ़ायेंगे।
विश्वास यही हमको, तुम सम बन जायेंगे॥
निज शरण बुलाके अब, शाश्वत निज-वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

श्रावण शुक्ला दूज को, त्याग जयंत विमान।
मात मंगला गर्भ में, वसे सुमति भगवान्॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

चैत्र शुक्ल ग्यारस लिए, सुमतिनाथ प्रभु जन्म।
पिता मेघरथ के यहाँ, जन्मोत्सव की धूम॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ल-एकादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

नवी शुक्ल वैशाख को, तजे अयोध्या धाम।
सुमतिनाथ तप से सजे, हम सब करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लनवम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

ग्यारस शुक्ला चैत्र को, पाये पद अरिहंत।
ज्ञानोत्सव में गूँजती, जय-जय सुमति महंत॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ल-एकादश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

चैत्र शुक्ल एकादशी, मोक्ष महोत्सव सार।
भक्त सुमतिप्रभु को, करें नमन अनन्तों बार॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ल-एकादश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जयमाला

(सोरठा)

सुमतिनाथ भगवान्, जो अविनाशी धन दिए।
बुद्धि-वृद्धि दो दान, अतः नमन पूजन किए॥

(ज्ञानोदय)

जिन्हें बुद्धि ने छोड़ दिया है, जिनकी बुद्धि कुबुद्धि हुई।
जिनकी है जड़ बुद्धि धरम में, या दुर्बुद्धि कर्म में हुई॥
बुद्धि-वृद्धि को जो जन चाहें, जो खोजे सद्बुद्धि विजय।
शीश झुकाकर सुमति प्रभु की, वे बोलें मन से जय-जय॥ 1॥

जिनने प्रभु की जय-जय बोली, उनके बुद्धि विकार नशे।
नाम कथा करने वालों के, उजड़े घर भी शीघ्र वसे॥
दर्शन पूजन का क्या? कहना, भक्त जनों के मजे-मजे।
जगरथ तज उनके विद्यारथ, मोक्षपुरी को सजे-सजे॥ 2॥

इक राजा रतिषेण नाम का, कला तथा विद्या स्वामी।
काम भोग की कुछ न कमी थी, अरिहंतों का अनुगामी॥
अर्जन रक्षण वर्धन व्यय से, धर्म अर्थ सेवन करता।
लीलापूर्वक राज्य पालकर, मन में यों चिन्तन करता॥ 3॥

पर्यायों की भव भँवरों में, अपना आतम फँसा रहा।
दुर्जन्मों के दुर्मरणों के साँपों से यह डँसा गया॥
कौन? करे कल्याण जीव का, कैसे पथ सुख शांति मिले।

अर्थ काम संसार बढ़ाता, इनसे तो दुख दर्द मिले॥ 4॥

घर में रहकर धर्म कर्म में, होती रहती पाप कथा।
हिंसा सहित धर्म से फिर क्या?, मिट सकती है व्यथा कथा॥
पाप रहित मुनि धर्म मात्र ही, शाश्वत सुख दे आतम को।
ऐसा उत्तम फल का दाता, यही हुआ चिन्तन हम को॥ 5॥

राज्य सौंप अतिरथ बेटे को, खुद ने ले ली जिनदीक्षा।
ममता त्यागी समता धर ली, मोह शत्रु जय की इच्छा॥
जीव मात्र का मंगल हो जब, ऐसे भावों को साधे।
सोलहकारण भावनाएँ भा, तीर्थंकर पद को बाँधे॥ 6॥

अन्त समय संन्यास मरण कर, वैजयन्त अहमिन्द्र हुए।
स्वर्ग त्याग कर भरत क्षेत्र में, वृषभ वंश उत्पन्न हुए॥
नगर अयोध्या में जन्मोत्सव, करके सुमतिनाम रक्खा।
इन्द्रों ने स्वर्णिम तन प्रभु को, पूज पुण्य पाया पक्का॥ 7॥

कुमारकाल दशा गुजरी तो, सुमतिनाथ को राज्य मिला।
आर्त्त ध्यान बिन रौद्र ध्यान बिन, सभी प्रजा का भाग्य खिला॥
दिव्य राज भोगों को भोगा, भव से शीघ्र विरक्त हुए।
सुमतिनाम को सार्थक करने, निज हित में अनुरक्त हुए॥ 8॥

मैं तो ज्ञानी कहलाता हूँ, अहित क्रिया कैसे कर लूँ।
अल्प सुखों को त्याग आज ही, शुभ वैराग्य हृदय धर लूँ॥
यदि सम्यक् वैराग्य न हो तो, सम्यक ज्ञान न मिल सकता।
जब तक सम्यक् ज्ञान न तब तक, निज स्वरूप न खिल सकता॥9॥

निज स्वरूप में लीन न जब तक, तब तक क्या सुख पाओगे।
अतः सुखार्थी बन वैरागी, वरना फिर पछताओगे॥
तब लौकान्तिक देवों ने आ, कर दी हाँ-हाँ अनुमोदन।
अभय पालकी में फिर बैठे, चले सहेतुक वन भगवन्॥ 10॥

इक हजार राजाओं के सह, बेला मय मुनि दीक्षा ली।
ज्ञान-मनःपर्यय झट प्रकटा, पद्मराज के भिक्षा ली॥
बीस वर्ष छद्मस्थ बिताकर, बेला मय ध्यानस्थ हुए।
केवलज्ञानी संत हुए तो, ज्ञानोत्सव मय भक्त हुए॥11॥

आप अठारह क्षेत्रों में फिर, कर विहार कल्याण किए।
आत्मा को परमात्मा बनने बनो महात्मा ज्ञान दिए॥
मासिक योग निरोध किया फिर, प्रतिमा योग ध्यान ध्याया।
अविचल कूट सम्मेदशिखर से, संध्या मोक्ष महल पाया॥12॥
ऐसे सुमतिनाथ भगवन् के, दर्शन कर गुण गाने में।
चारों धामों का सुख मिलता, सादर शीश झुकाने में॥
दुनियाँ में वो शांति कहाँ जो, शांति शरण में आने में।
जीने में वो मजा कहाँ जो, मजा यहाँ मर जाने में॥ 13॥

जिनप्रभु को बस गुरु ग्रह नाशक, जो माने वे अज्ञानी।
सुमतिनाथ का नाम अकेला, हर ले सभी परेशानी॥
हर संकट के हर कंटक लो, खुशियों की दे दो कलियाँ।
'सुव्रत' तुम सम बनने माँगें, मोक्ष महल सुख की गलियाँ॥14॥

जिन का चकवा चिह्न है, पञ्चम जो जिनराज।
सुमतिनाम जिनका उन्हें, नमस्कार हो आज॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं.....।

सुमतिनाथ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, सुमतिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

विधान अर्घ्यावली

(6 अनायतन) (14 मात्रिक-हाकलिका)

अस्त्र-शस्त्र जो वस्त्र रखें, अपने पुत्र कलत्र रखें।
पाप व्यसन पथ पर चलके, भक्ष्याभक्ष्य सदैव भखें॥
यही कुगुरु है अनायतन, इनसे बचने ओ! चेतन।
सुमति, सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥ 1॥

ॐ ह्रीं कुगुरुमार्गविभ्रमविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कुगुरु जनों के सेवक की, पूजक अर्चक वंदक की।
तन मन धन से सेवाएँ, कुगुरु सेवक कहलाएँ॥
ये भी समझो अनायतन, इनसे बचने ओ! चेतन।
सुमति, सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥ 2॥

ॐ ह्रीं ऊँचनीचभावविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

वीतराग सर्वज्ञ नहीं, हितोपदेशी विज्ञ नहीं।
दोष अठारह सहित रहे, मिथ्याजन से भजित रहे॥
वो कुदेव हैं अनायतन, इनसे बचने ओ! चेतन।
सुमति, सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥ 3॥

ॐ ह्रीं उच्चकोपविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पूजक भक्त कुदेवों के, मोक्षमार्ग से जो भटके।
खुद भटके वो भटकाते, कुदेव सेवक कहलाते॥
ये भी समझो अनायतन, इनसे बचने ओ! चेतन।
सुमति, सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥ 4॥

ॐ ह्रीं नीचकोपविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

उल्टा सत्य अहिंसा का, पथ दे दुख का हिंसा का।
कपोल कल्पित एकांती, वो कुधर्म है बस भ्राँति॥
ये भी समझो अनायतन, इनसे बचने ओ! चेतन।
सुमति, सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥ 5॥

ॐ ह्रीं शत्रुप्रभावविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जो कुधर्म सिर पर धरता, पक्षपात की कट्टरता।
स्वरूप का ना भान जिन्हें, कुधर्म सेवक कहो उन्हें॥
ये भी समझो अनायतन, इनसे बचने ओ! चेतन॥
सुमति, सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥ 6॥

ॐ ह्रीं पापोदयप्रभावविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

(षट्काल वर्णन)

भोगभूमि सुख जो उत्तम, कल्पवृक्ष दे सर्वोत्तम।
धर्म कर्म का काम नहीं, सुखमा-सुखमा काल यही॥
इनसे मिले न परमातम, इनसे बचने ओ! चेतन॥
सुमति, सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥ 7॥

ॐ ह्रीं काललब्धिविभ्रमविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

भोगभूमि जो है मध्यम, जहाँ भोग सुख थोड़े कम।
पले न संयम नियम जहाँ, होता सुखमा काल वहाँ॥
इनसे मिले न परमातम, इनसे बचने ओ! चेतन।
सुमति, सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥ 8॥

ॐ ह्रीं कालकुप्रभावविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

भोग भूमि जो रही जघन्य, यहाँ भोगसुख सबसे कम।
यहाँ पले चारित्र नहीं, सुखमा दुखमा काल यहीं॥
इनसे मिले न परमातम, इनसे बचने ओ! चेतन।
सुमति, सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥ 9॥

ॐ ह्रीं दुष्कालप्रभावविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जिसको चौथा काल कहा, सुख कम ज्यादा दुक्ख यहाँ।
धर्म कर्म दे मोक्ष मही, दुखमा-सुखमा काल यही॥
दिलवाता यह परमातम, इसको पाने ओ! चेतन।
सुमति,सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥ 10॥

ॐ ह्रीं सुकालप्रभाववर्धनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पंचमकाल जिसे माना, दुख का वह ताना-बाना।
मोक्षमार्ग दे मोक्ष नहीं, होता दुखमाकाल यही॥
इनसे मिले न परमातम, इनसे बचने ओ! चेतन।
सुमति,सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥ 11॥

ॐ ह्रीं दुर्घटनाकालप्रभावविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

छठवा काल जिसे कहते, जिसमें दुख ही दुख सहते।
जहाँ हिताहित ज्ञान नहीं, दुखमा-दुखमा काल यही॥
इनसे मिले न परमातम, इनसे बचने ओ! चेतन।
सुमति,सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥ 12॥

ॐ ह्रीं अकालप्रभावविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

(षट्कर्म वर्णन)

अस्त्र-शस्त्र तलवारों का, हिंसक सब हथियारों का।
शिक्षण रक्षण सिखलाता, असिकर्म-वह कहलाता॥
इनसे मिले न परमातम, इनसे बचने ओ! चेतन।
सुमति,सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥ 13॥

ॐ ह्रीं अस्त्र-शस्त्रकुप्रभावविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

लेखन स्याही कलम दवात, कागज ताड़पत्र की बात।
इनका ज्ञान दिलाता जो, मसि कर्म कहलाता वो॥
इनसे मिले न परमातम, इनसे बचने ओ! चेतन।
सुमति,सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥ 14॥

ॐ ह्रीं जालीदस्तावेजप्रभावविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

खेत कृषक कृषि यंत्रों की, रचना प्रयोग तंत्रों की।
इनका दिग्दर्शन दाता, कृषि कर्म वह कहलाता॥
इनसे मिले न परमातम, इनसे बचने ओ! चेतन।
सुमति,सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥ 15॥

ॐ ह्रीं कृषिकृषकसमस्याविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कला बहत्तर अपनाना, उच्च नौकरी पर जाना।
करना अथवा करवाना, विद्या कर्म वही माना॥
इनसे मिले न परमातम, इनसे बचने ओ! चेतन।
सुमति,सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥ 16॥

ॐ ह्रीं विद्याविवादविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

धातु रत्न भू पत्थर की, रचना भूषण प्रभु घर की।
इसकी शिक्षा रक्षायें, शिल्प कर्म वह कहलायें॥
इनसे मिले न परमातम, इनसे बचने ओ! चेतन।
सुमति,सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥ 17॥

ॐ ह्रीं वास्तुमूर्तिदोषविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जो व्यापार रहा धंधा, पाप बुराईमय गंदा।
कर उद्योग अर्थ पाना, वो वाणिज्य कर्म माना॥
इनसे मिले न परमातम, इनसे बचने ओ! चेतन।
सुमति,सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥ 18॥

ॐ ह्रीं व्यापारसमस्याविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

(गृहस्थ के षट्-आवश्यक)

श्री अरिहंत जिनेश्वर की, अष्टद्रव्य से सादर ही।
कर अभिषेक करो पूजा, पहला कर्म देव पूजा॥
इनसे मिलती परमातम, इनको करने ओ! चेतन।
सुमति,सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥ 19॥

ॐ ह्रीं देवपूजाविभ्रमविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जो निर्ग्रन्थ महन्त रहे, श्रमण वही गुरु संत कहे।
गुरु सेवा आज्ञा पालन, गुरूपास्ति श्रावक का धर्म॥
इनसे मिलती परमातम, इनको करने ओ! चेतन।
सुमति,सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥ 20॥

ॐ ह्रीं गुरुस्वरूपविभ्रमविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पाठन पठन जिनागम का, व्रतमय तप है आतम का।
आत्म ज्ञान अध्याय सही, आवश्यक स्वाध्याय यही॥
इनसे मिलती परमातम, इनको करने ओ! चेतन।
सुमति,सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥ 21॥

ॐ ह्रीं स्वाध्यायविभ्रमविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

हिंसा तज इन्द्रिय जय जो, प्राणी इन्द्रिय संयम वो।
श्रावक धरे नियम यम जो, वह आवश्यक संयम हो॥
इनसे मिलती परमातम, इनको करने ओ! चेतन।
सुमति,सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥ 22॥

ॐ ह्रीं संयमविरोधविभ्रमविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

इच्छा-निरोध तप उत्तम, यथा शक्ति धरले आतम।
कर्म निर्जरा तप से हो, डरते क्यों तुम तप से हो॥
इनसे मिलती परमातम, इनको करने ओ! चेतन।
सुमति,सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥ 23॥

ॐ ह्रीं तपध्यानविभ्रमविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

चार तरह का दान करो, द्रव्य पात्र विधि ध्यान रखो।
मिले भोग सुख-मोक्ष मही, दान धर्म सिद्धान्त यही॥
इनसे मिलती परमातम, इनको करने ओ! चेतन।
सुमति,सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥ 24॥

ॐ ह्रीं दानत्यागविभ्रमविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य

(लय : भव-वन में .....)

हे! सुमतिनाथ खलु चिच्च देव, प्रभु तुमसा हमको मिला नहीं।
बस इसीलिए चैतन्य बाग, हे! नाथ हमारा खिला नहीं॥
अब कृपा दृष्टि हम पर करके, निज में निज का सौरभ भर दो।
कौरव जैसा रौरव हर के, जिनसा अपना गौरव कर दो॥

मजबूर बने मजदूर बने, मजबूत कभी ना बन पाये।
तब भूत भभूत रहे मलते, पर मुक्ति दूत ना बन पाये॥
संभव है जग की उलझन में, हम छोटे भले तुम्हें भूलें।
पर आप न भूलो छोटों को, क्या बड़े फर्ज अपना भूलें॥

यह अर्घ कीमती तब होता, जब प्रभु चरणों में चढ़ता है।
यह भक्त कीमती तब होता, जब प्रभु चरणों में झुकता है॥
लो शीश झुकाकर भक्त तुम्हें, यह सादर अर्घ भेंटते हैं।
अब नाथ! तुम्हारी बारी है, हम तो बस राह देखते हैं॥

(दोहा)

सुमतिनाथ की अर्चना, हरती कर्म समूल।
अतः नमन वंदन करें, खिलें भक्ति के फूल॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

विश्व प्रसिद्ध महान् हैं, सुमतिनाथ भगवान्।
भाव सहित नत हो करें, जिनगुण का गुणगान॥

(लय : अनादिकाल से कर्मों से....)

अनादिकाल से अपनों के हम सताये हैं।
अपनों से मिला दर्द कष्ट घाव पाये हैं॥
अपनों से जन्म-जन्म की हमको मिली सजा।
अपनों की गूँज विश्व में अपनों से हर मजा॥ 1॥

अपनों में इतने चूर हैं कितने बताएँ हम।
अपनों से ये संसार है अपनों से हर करम॥
अपनों से राग-द्वेष मोह पाप की कथा।
अपनों ने दिए चेतना को कर्म की व्यथा॥ 2॥

अनायतन अपनों से सीखा हमने पूजना।
विभाव अपना सा हुआ ना मिली सूचना॥
हर बुराई या व्यसन अपने से ही मिले।
अपनत्व के उजाड़े हैं अपनों ने हौसले॥ 3॥

अपनों ने छहों काल चक्र में घुमाया है।
अपनों ने कष्ट विघ्न का चक्कर चलाया है॥
अपनों ने सिद्ध चक्र से मिलने से रोका है।
अपनों को फिर भी जान न सके जो धोखा है॥4॥

अपनों ने छहों कर्म में हमको फँसा दिया।
अपने ने हिंसा पाप का दलदल वसा दिया॥
अपने तो गसे कीच में हमको गसा दिया।
अपने तो डसे नाग से हमको डसा दिया॥ 5॥

संसार कैसे अपना जो अपनों को मारता।
जो अपना देख अपने को जल्दी दहाड़ता॥
पहचान हमको न हुई अपनों की आज तक।
इससे चले आए हम प्रभु के धाम तक॥ 6॥

पत्नी साथ देती है केवल मकान तक।
बन्धु मित्र साथी हैं केवल मसान तक॥
ये बेटा साथ देता है मुखाग्नि दान तक।
अब कौन साथ देगा हमें केवलज्ञान तक॥ 7॥

आँख खुली सपना, गया आँख झपी जपना भी।
आँख लगी अपना गया आँख मुँदी दफना भी॥
निर्वाण तक जो साथ दे वो साँचा अपना है।
ये विश्व सारा मोह का विस्तार सपना है॥ 8॥

अपनों के मुखौटे जिन्होंने ओढ़ के रखे।
अपनों के रिश्ते नाते अब तो छोड़ दे सखे॥
ये अपने कभी हो ना सके ये तो पराये।
इनको छोड़ने की ललक साथ हम लाये॥ 9॥

अब आपको ही हमने अपना ईश कह दिया।
चरणों को पूज्य माना हमने शीश धर दिया॥
ना भेंट है ना द्रव्य है ना भाव भी भला।
ना भक्ति है ना शब्द है ना छन्द की कला॥ 10॥

फिर भी तुम्हारे नाम से हो विश्व का भला।
हर कष्ट भी टला है शिखर मान का गला॥
हर कर्म भी जला है भक्त छाँव में पला।
इनसे जिनेन्द्र भक्त तेरी राह पर चला॥ 11॥

श्रावक बने तो आवश्यक षट् पाल के चलें।
तेरी कृपा से धर मुनिव्रत मोक्ष को चलें॥
यही हो पूरी प्रार्थना विश्वास न टले।
'सुव्रत' की ये ही कामना चरणों की रज मिले॥12॥

(दोहा)

सुमति-सुमित में लीन है, सुमति-सुमति चित् धार।
हमें सुमति की धार दो, अतः नमोस्तु शत बार॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय समुच्चयजयमालापूर्णार्घ्यं.....।

सुमतिनाथ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, सुमतिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

॥ इति श्री सुमतिनाथविधान सम्पूर्णम्॥

प्रशस्ति

अजितनाथ प्रभु मूल में, चौबीसों भगवान।
पूर्ण 'चन्देरी' में हुआ, सुमतिनाथ विधान॥
दो हजार तेरह मई, मंगल दिन अट्ठाईस।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

॥ इति शभम् भूयात्॥

आरती

(लय : जीवन है पानी की बूँद....)

सुमतिनाथ जिनवर का नाम, भजते जाओ रे।
दीपों से आरति हाँ-हाँ[2], सब करते जाओ रे॥
सुमतिनाथ चैतन्य बने, पर भावों से अन्य बने।
मोक्षमार्ग के संचालक, मोक्ष प्राप्त कर धन्य बने॥
चरणों की धूलि हाँ-हाँ[2], अब हमें दिलाओ रे।
सुमतिनाथ जिनवर.....॥ 1॥
मात मंगला के तारे, पिता मेघरथ के प्यारे।
नगर अयोध्या के स्वामी, भक्त लोक के उजयारे॥
भक्तों की ज्योति हाँ-हाँ[2], अब आप जलाओ रे।
सुमतिनाथ जिनवर.....॥ 2॥
तुम बिन किसे पुकारें हम, जायें कहाँ निहारें हम।
किससे अपनी व्यथा कहें,कैसे आत्म निखारें हम॥
ज्ञानी ओ ध्यानी हाँ-हाँ[2], निज दास बनाओ रे।
सुमतिनाथ जिनवर.....॥ 3॥
सुनो! प्रार्थना आओ जी, अब ना देर लगाओ जी।
'सुव्रत' के मन मन्दिर में, आतम जोत जलाओ जी॥
हमको भी स्वामी हाँ-हाँ[2], जिन गाँव बुलाओ रे।
सुमतिनाथ जिनवर.....॥ 4॥